**प्रतियाँ :** 5000

**पूनरावृत्ती :** 2015

**मुद्रणालय :**
**स्वामी ऑफसेट प्रिंटर्स**
**पिठापुरम** - 533450

मूल्य : **15/-** रुपये

**इस पुस्तकों केलिए :**
**कार्यनिर्वाहण अधिकारी**
**श्री कुक्कुटेश्वर स्वामि देवस्थान**
पादगया क्षेत्र, देवादायो दर्मदाया शेखा
**पिठापूरम - ५३३४५०,** तुर्प गोदावरी जिल्ला.
आंद्रप्रदेंश, फोन : 08869-252477
www.srikukkuteswraswamypadagaya.com
www.padagaya.com
email: eopadagaya@gmail.com

# पीठिकापूरी क्षेत्र महत्म्यम

## *पादगया क्षेत्र*

**संकलन**
**ब्रह्मश्री द्विभाष्यं सुब्रह्मण्य शर्मा**
आस्थान वेद पंडित

हिन्दी अनुवादक
**श्री के.वेंकट रेड्डि**
Asst. Director (Retd)
Song & Drama Division
Ministry of Information & Broadcosting
Govt. of India, **BANGALORE**

**प्रचारक:**
**कार्यनिर्वाहण अधिकारी**
**श्री कुक्कुटेश्वर स्वामी देवस्थान**
पादगया क्षेत्र, देवादायो दर्मदाया शेखा
**पिठापूरम - ५३३४५०,** तुर्प गोदावरी जिल्ला.
आंद्रप्रदेंश, फोन : 08869-252477
मूल्य : **15/-** रुपये

# पादगया क्षेत्र का महात्म्य

संपूर्ण भारत में तीन गया क्षेत्र हैं। जिन में पाद गया क्षेत्र बहुत पुरातन तथा विख्यात हैं। यह बहुत ही प्राचीन शैव क्षेत्र है। जो भक्तों को अवश्य दर्शनीय हैं। शिव भगवान अपने भक्त गयासुर की इच्छा के अनुसार ''कुक्कुटेश्वर'' स्वामी के रुप में यानी मुर्गेके रुप में स्वयंभू लिंग की आकृति में आविर्भूत हुए। यह क्षेत्र पित्रुदेवताओं की मुक्ति के लिए दर्शनीय है। इस क्षेत्र के दर्शन से सर्व पापों का हरण हो जाता है और सारी मनो कामनाओं की पूर्ति होती है और सारे दुःख दर्द समाप्त हो जाते हैं।

# ''गयासुर'' की कहानी

पूर्व काल में यानी कृतयुग में 'गयासुर' नामक एक दानवेंद्र था। वह बहुत बडा भक्त था। उसने कई दिव्य वर्षों तक श्री महाविष्णु की तपस्या की। उस की तपस्या से भगवान प्रसन्न हो गये। विष्णु भगवान ने मूर्ति प्रत्यक्ष हो कर 'गयासुर' से कहा ''वत्स ! मै तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी वर माँग लो''। तब गयासुर ने कहा ''प्रभू ! इस पृथ्वी पर जितने भी पुण्य तीर्थ क्षेत्र हैं उन सब से मेरा शरीर पवित्र हो ऐसा वरदान का अनुग्रह करें'' । विष्णु भगवान ने 'तथास्तु कहा और अंतधनि हो गये।



गयासुर के 'परम पवित्र' देह के दर्शन मात्र से पंच महापाप करने वाले नर नारी पवित्र होकर मुक्ति पा जाते थे। गयासुर के परम पवित्र शरीर को छूकर आने वाली हवा के लगने से घोर नरक में जाने वाले पापियों को भी मुक्ति मिलजाती थी।

धर्मात्मा गयासुर ने अश्वमेध आदि कई यज्ञ किये जिन की कोई गिनती ही नहीं। जो सौ यज्ञ करता है उसे इन्द्र का सिंहासन प्राप्त होता है। गयासुर को भी इन्द्र का पद मिला। देवेंद्र पदच्युत हुआ था। उन्होंने पृथ्वी पर आकर ब्रह्मा,विष्णु और महेश्वर को लक्ष्य कर के दस हजार वर्ष तक अकुंठित दीक्षा के साथ कठोर तपस्या की।

देवेंद्र की तपस्या से प्रसंन्न होकर त्रिमूर्ति उस के सामने प्रकट हुए। देवेंन्द्र ने संतुष्ट होकर उन तीनों देवताओं की अच्छी स्तुति की तब त्रिमूर्तियों ने देवेंन्द्र से कहा ''वत्सा ! तुम्हारी तपस्या से हम प्रसन्न हुए हैं। तुम क्या चाहते हो कोई वर माँगो''। तब देवेन्द्र ने उन से कहा - हे प्रभु! गयासुर के राज्य मे प्रजा को बहुत कष्ट उठाने पड रहे है। गयासुर तो धर्मात्मा है लेकिन उस के अनुचर बडे क्रूर और दुष्ट हैं। वे लोगों को अकारण ही मार देते है। ऋषि मुनियों को यज्ञ यागादि कार्य करने नहीं देते। पतिव्रता नारियों का छल करते हैं। तपोधनों को और महात्मा लोगों को सताते हैं। ऐसा करने से यज्ञ याग आदि कार्यक्रम स्थगित हो जाने के कारण देवताओं को हव्य भाग नहीं मिल रहा है और वे दुर्बल होते जा रहे है। समय पर वर्षा नहीं हो रही हैं और सारे भूमंडल में अकाल पड गया है। वर्षा के अभाव से फसलें नहीं होने से प्रजा बहुत ही कष्ट उठा रहीं है। सारी भूमि

बंजर बनती जा रही है। इसिलिए आप त्रिमूर्तियों से मेरी विनंती है कि, शीघ्र ही आप कोई उपाय दूँढें और इस 'गयासुर' राक्षस को वध कर के मुझें मेरा इंद्रपद वापस देदे ताकि मै इस दुखः भरी परिस्थिती को सुधार सकूँऔर फिर से तीनों लोको में शांति प्रस्थापित कर सकूँ'यदि आप मुझे फिर से देवेंद्र बना देंगे तो मै यज्ञ याग आदि कार्यक्रम फिर से प्रारंभ कर दूँगा। जिस से वर्षा होगी और फसलें भी होंगी। सारी प्रजा सुख और संतोष के साथ जीवन बिताएगी। और देवता लोग भी अपने अपने हव्य भाग लेकर संतुष्ट हो जायेंगे और तीनों लोकों में सुख शांति की स्थापना होगी । तब त्रिमूर्तियों ने देवेन्द्र को तथास्तू बोलकर वरदान प्रदान किया।

देवेंद्र को जो वरदान दिया था उसे सफल बनाने केलिए त्रिमूर्तियों ने ब्राह्मणों का वेष धारण किया और गयासुर के पास गये। अतिथि के रुप मे आये हुए उन तीनों ब्राह्मणों को गयासुर ने बडे आदर सत्कार के साथ उन का आव भगत किया । अर्ध्यपाद आदि से उन की पूजा की। और कहा ''महात्मा पुरुष योंही कहीं नहीं पधारते ऐसा लोग कहते है। कि अच्छा तो बताइये की आप किस कार्यसिद्धि केलिए मेरे यहाँ पधारे हैं?''

कार्य साधन केलिए, साम, दान, भेद और दंडोपाय ये चार विधि बतायी गयी हैं। त्रिमूर्तियों ने यह निर्णय किया कि गया सुर 'दान' के उपाय से ही मारा जा सकता है। तब उन तीनों ने गया सुर से कहा, - ''हे धर्मात्मा गयासुर !हमें अपने स्वार्थकेलिए या व्यक्तिगत कोई इच्छा नहीं है। तुम धर्मात्मा हो। तीनों लोकों के अधिपति भी हो। तुम्हारे राज्य पालन में भूलोक में सारी जीव राशी दुर्भिक्ष से पीडित है। बरश न होने से फसलें नहीं हो रही



है और प्रजा संकट में है और बहुत दुखी है। उन के दुख निवारण और देश में शांति स्थापन के लिए हम एक यज्ञ करना चाहते हैं। वह यज्ञ सात दिन तक चलेगा। उस यज्ञ से वर्षा होगी अच्छी फसले होंगी और प्रजा धन धान्य से समृद्द हो जायेगी। तीनों लोकों में सुख और शाँति होगी।

तब गयासुर ने कहा, हे महात्माओं ! आप मेरे ऊपर दया कर के वह यज्ञ शीघ्र ही प्रारंभ कीजिये। उस यज्ञ पूर्ती केलिए जो भी चाहिए मै दूँगा। यदि मेरा शरीर भी उस केलिए उपयोगकारी है तो लोक कल्याण केलिए मै उसे भी त्याग दूँगा। यज्ञ के लिए क्या क्या चाहिए? गायें ? दक्षिणा देने केलिए धन? यज्ञ केलिए जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता है वह सब मै जुटवाऊँगा। यज्ञविथी के लिए कौन सा पुण्यक्षेत्र चाहिए ? बताइये आप कोई संकोच न करें।''

तब त्रिमूर्तियों ने कहा,''गयासुर ! हम ने यज्ञ के लिए धन, धान्य, गायें आदि सारी वस्तुवोंको जुटा लिया है। तुम केवल यज्ञ विधी के लिए स्थल दो तो पर्याप्त होगा। इस महान यज्ञ भार को साधारण भूमि सहन नहीं कर सकेगी । इस भूमंडल पर जो पुण्यक्षेत्र हैं वो भी इस यज्ञ केलिए उपयुक्त नहीं हैं। क्यों कि पापी लोग अपने पाप को मिटाने केलिए इन पुण्यक्षेत्रों मे स्नान, दान, तप, यज्ञयाग आदि करा के अपने पापों से इन क्षेत्रों को कलुषित करने है। इसलिए ऐसे पापों से भरे हुए क्षेत्र, हमारे यज्ञ केलिए उपयुक्त नहीं हैं।

केवल पाप रहित तुम्हारा पवित्र शरीर ही इस यज्ञ की विधी केलिए उपयुक्त है। तुम ने पूर्वकाल में श्री महा विष्णु जी से वरदान प्राप्त किया था, की इस सारी पृथ्वी के स भी पुण्यक्षेत्रों

से भी तुम्हारा शरीर पवित्र हो। यदि तुम्हें स्वीकार हो तो तुम्हारे इस परम पवित्र शरीर पर हम अपना यज्ञ करेंगे।

यह सुनकर प्रसन्न होकर गयासुर ने कहा, मेरे इस पंच भौतिक शरीर से आप यज्ञ करना चाहते है, इस से बढकर कौन सा उत्तम कार्य और क्या हो सकता है? इस शरीर पर आप को यज्ञ करने केलिए मुझे कोई आपत्ति नहीं है। आप तुरंत यज्ञ का प्रारंभ कीजिये।

त्रिमूर्तियों ने कहा - धन्य हो गयासूर ! लेकिन एक शर्त है। जब तक हमारा यज्ञ संपूर्ण रुप से संपन्न नहीं होता तब तक तुम्हें आपने देह को हिलाना नहीं होगा । यदि तुम्हारा शरीर हिल गया तो हमारा यज्ञ असफल हो जायेगा । इसी कारण तुम को आत्मसमर्पण करन होगा । आपको देह दंड होगा। यह सुनकरभी गयासुर ने यज्ञ केलिये स्वीकृति दे दी।

सात दिन का वह यज्ञ था । एक अच्छे से शुभदिन को ब्राह्मी मुहूर्त में यज्ञ प्रारंभ करने का निश्चय हुआ। ब्राह्मी मुहूर्त यानी मुर्गी के बाँग देने का समय होता है। इस पवित्र यज्ञ में समस्त देव गण, ऋषि मुनिगण, गरुड, गंधर्व यज्ञ किन्नर, किंपुरुषों ने भाग लिया।

गयासुर ने अपनी महिमा शक्ति से अपने शरीर को बढा कर अपने सिर को बिहार प्रदेश के गया क्षेत्र में, नाभि स्थान को उडिसा प्रदेश के जाजपुर में और पाँवों को परम पवित्र स्थान पिठापुरम जो आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में अब आता है। जिस को हम पादगया बोलते है। वहा पर रख दिया और त्रिमूर्तियों से प्रार्थना की वे यज्ञ आरंभ करें।



विष्णुजी सिर स्थाने, ब्रह्म जी नाभि स्थान पर और शिवजी पैरों के पास बैठ कर यज्ञ का आरंभ किया। गयासुर ने योग माया से अपने शरीर को निश्चल कर दिया। और हर दिन मुर्गे की बाँग सुन कर यज्ञ कितने दिन हुआ, गिनता जा रहा था। इसी प्रकार छः दिन बेरोकटोक यज्ञ चलता रहा। यदि सातवाँ दिन भी ऐसा ही गुजर जाय तो गयासुर का दिया हुआ वचन संपूर्ण हो जाता ।

लेकिन इतने में देवेन्द्र ने आकर त्रिमूर्तियों को उस को दिया हूआ वरदान को याद दिला कर गयासुर को किसी न किसी उपाय से मार डालने की प्रार्थना की । तब विष्णु जी के कहने पर शिवजीने मुर्गेका रुप धारण कर के असमय में ही बाँग दे दिया। वह लिंगोद्भव समय था यानी आधी रात थी । कुक्कुरो कू की ध्वनि सुन कर इस माया से अनभिज्ञ गयासुर ने समझा कि सातवाँ दिन पूरा हो गया और निश्चिंत होकर अपने देह को हिलाया। अभी यज्ञ पूरा नहीं हुआ और तुमने शरीर को हिला कर यज्ञ का भंग कर दिया । अब तुम्हे मृत्युदंड भोगना ही होगा। तूम देह दंड का स्वीकार करो'' ऐसा कहकर, गयासूर का संहार कर दिया।

तब संकट स्थिति में फँसा हूआ गया सुर अंतरमुख होकर दिव्य दृष्टि से सारी बातों का सार समझ गया। देवेन्द्र ने जो कपट नाटक त्रिमूर्तियों से करवाया और इसीलिए त्रिमूर्तियों ने ब्राह्मण वेष धारणकर यज्ञ के लिए मेरे शरीर को माँग कर उसे यज्ञ वाटिका बनाया है। शंकर जी ने मुर्गे का रुप धारण कर बाँग देकर मुझे धोखा दिया है। यह पूरी बात गयासुर को समझ में आ गई।

तुरंत गयासुर ने कहा, ''जातस्य मरणम् ध्रुवम'' जो पैदा होता है उसे कभी न कभी तो मरना ही पडेगा। त्रिमूर्तियों के हाथों में इस तरह मरना मुक्ति कारक है। इसलिए मै इसे अपना बडा भाग्य समझता हूँ। तब त्रिमूर्तियों ने कहा! ''गयासुर ! जिसे मृत्युदंड दिया जाता है उसे उसकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है। इसलिए तुम बताओं तुम्हरी आखिरी इच्छा क्या है? उसे पूरा करना हमारा कर्तव्य है। बोलो! तुम क्या चाहते हो?

मरनेवाले को क्या इच्छा होगी? फिर भी आप ने कहा कि वरदान माँगो। इसलिए माँग रहा हूँ। मेरे मरने के बाद मेरे शरीर के तीन प्रधान अंग त्रिगयाक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हो और उन् तीनों क्षेत्रों में आप तीनों मूर्तिया अलग अलग निवास कर के उन क्षेत्रों की महिमा बढाएँ और वे तीनों क्षेत्र शक्ति पीठ के रुप से विख्यात हो, जब किसी की मृत्यु हो जाती हैं तो इन क्षेत्रों में पिंड प्रदान करने से उन को पुनर्जन्म नहीं लेना पडेगा और उन को ब्रह्म लोक की प्राप्ति हो जायेगा । कहीं भी पितरों को तर्पण आदि और पिंड प्रदान किया जाय वहाँ यदि ''गया'' का नाम लिया जाय तो श्राध्द करने का फल मिले और पितरों को मुक्ति प्राप्त हो - ऐसा वरदान प्रदान करने की कृपा करें।

त्रिमूर्तियों ने ''तथास्तु'' कहकर उसे ये वरदान प्रदान किया और उस का वध कर के उसे मुक्ति प्रदान की। उन के दिये हुए वरदान के फल स्वरुप त्रिगयाक्षेत्रों का आविर्भाव हुआ। वे हैं ''शिरो'' गया जो बिहार में है - ''नाभि'' गया जो उडिसा में है - ''पाद'' गया जो आँध्र प्रदेश के पिठापुरम में है। इस तरह गयासुर के नाम पर तीन पुण्य क्षेत्र बन गये।



**१) शिरोगया :-** गयासुर का सिर जहाँ कट कर गिराथा वह बिहार के 'फल्गुणी'' नदी किनारे पर है। इसे ही ''गया'' कहते है। यही पर श्री महाविष्णु के पादमुद्राओं का एक मंदिर भी है। इसी क्षेत्र में मंगल गौरी का शक्ति पीठ भी हे। इसीलिए यह क्षेत्र अत्यंत पुण्य प्रद कहा जाता है।

**२) नाभिगया :-** यह क्षेत्र उडीसा के जाजिपुर में है जो कटक से नजदीक है। ब्रह्मा जी यहाँ पर यज्ञ वेदिका के रुप में हैं। ''गिरिजा देवी'' का शक्ति पीठ भी यहीं है जो यहाँ का प्रधान मंदिर है। हउरा और चेन्नाई रेल लेन में जाजिपुर 'किंजरा रोड'' स्टेशन के नजदीक है।

**३) पादगया :-** आँध्र प्रदेश के ईस्ट गोदावरी जिले के ''पिठापुरम'' नाम के परम पवित्र स्थान पर यह क्षेत्र है। यह क्षेत्र बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ 'कुक्कुटेश्वर'' स्वामी प्रधान देवता है। 'पुरुहूतिका'' माता का एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ भी यहीं विराजमान है। जैसे नमस्कार के रीतियों में पादाभिवंदन अत्युत्तम माना जाता है। उसी तरह त्रिगया क्षेत्रों मे पादगया ही श्रेष्ठ और उत्तम माना जाता है। गोदावरी पुष्कर के समय विशेष रुप से उडिसा के भक्त जन पवित्र गोदावरी में स्नान कर के पिठापुरम में आकर पवित्र पादगया क्षेत्र में पिंड प्रदान आदि पित्रु कर्म कांड करते है। उडिसा के भक्त जन हर घर से कम से कम एक व्यक्ति पादगया पुण्य क्षेत्र मे आकर पितरों को पिंड प्रदान करते है। और ये रिवाज युग युगोंसे चलता आ रहा है।

पादगया क्षेत्र संसेवन पित्रु पितामहों के लिए मुक्ति कारक है। सर्वपापों का हरण हो जाता है। पित्रु, पितामहों की

मुक्ति केलिए केवल पांच पुण्यक्षेत्र ही इस भूमंडल पर प्रस्तुत हैं। १) शिरोगया (बिहार) २) नाभिगया (उडीसा) ३) पादगया (पिठापूरम - आँध्रप्रदेश) ४) मात्रु गया (सिध्दिपुर - गुजरात) ५) ब्रह्म कपाल क्षेत्र - (बदरी - उत्तरांचल)

**एष्टव्या बहवः पुत्राः यदये कोपि गयां व्रजेत्।**
**गौरींवा वरयेकन्याम नीलं वा वृष मुत्सृजेत।।**

वायु पुराण में व्यास महर्षि ने गया क्षेत्र की महिमा का वर्णन किया है। क्या हमारे वंश के सभी लोग पित्रु देवताओंका गया में श्राध्द आदि क्रिया कर्म करते है? क्या कोई बैल और गाय का कल्याण (शादी) करते है? क्या कोई कन्या को जो अभी पुष्पवती नहीं हुई है कल्याण (शादी) करा देते हैं? इन सारी बातों के लिए हमें हमारे पूर्वज ऊपर से बडी उत्सुकता से देखते रहते हैं। क्यों कि उपर्युत्क कार्यों से हमारे पित्रु पितामहों को शाश्वत मुक्ति मिल जाती है। बैल और गाय की शादी करने से गौ संतान की वृध्दि होती है और गो संतति किसानों केलिए बहुत लाभदायक है। बैल खेती करने में किसान के काम आते है।

पादगया क्षेत्र में पित्रु कार्यक्रमों का बडा विशिष्ट स्थान है। खास कर यहाँ अन्नदान करने से हमारे पित्रु पितामह को अवश्य प्राप्त हो जाता है। इसीलीये इस क्षेत्र में नित्यान्नदान का कार्यक्रम चल रहा है।

## स्वयंभू शिवक्षेत्र 'पिठापुरम'

लोक कल्याणार्थ सर्वलोक शुभंकर भगवान शिवजी ने गयासुर के संहार के लिए कुक्कुट (मूर्ग) का रुप धारण किया था।



गयासुर की इच्छा के अनुसार भगवान कुक्कुटेश्वर के रुप मे स्वयंभू होकर अवतरित हुऐ। और भक्त जनों को अनुदिन अनुग्रहीत कर रहे है। ये भक्त जनो केलिए कल्पतरु हैं। स्फटिक लिंगाकार मूर्ति के रूप में भक्त जनों को दर्शन देकर उन का उध्दार करते हैं।

### श्री राजराजेश्वरी देवी
### श्री स्वामी की देवेरी

इस पवित्र क्षेत्र में श्री राजराजेश्वरी देवी भक्तजनो के लिए कल्पवल्ली है। सारी इच्छाओं की पूर्ती करने वाली जगज्जननि है। ब्रह्मंड पुराण में सहस्त्र नामों में जैसे वर्णन किया गया है वैसा ही ''कुमार गणनाथांवा के नाम के अनुसार - एक तरफ चतुर्भूज मूर्ति जो मयूर वाहन पर विराज मान है दूसरी तरफ चतुर्भूज गणपति मूर्ति माँ देवी के दोनों तरफ विराज मान है। यह दोनों पुत्रों समेत माँ देवी का दर्शन अत्यंत फलदायक और आनंद दायक है। और ललिता सहस्त्र नामों में 'राज राजेर्यै नमः'' कहा गया है। बडे बुजुर्गोका कहना है कि माँ देवी की स्थापना श्री आदि शंकराचार्य स्वामी ने की थी।

**काचिल्लता तरुःकक्ष्चित पीठायां सदभ्दुतम।**
**अपर्णा सा सतु स्यामणुः ददाते कांक्षितं फलम।।**

कहा जाता है कि पिठापुरम में एक अद्भूत लता है। और एक विचित्र वृक्ष है। उस लता में पत्तें नहीं है। वह पेड सूख कर काठी की तरह खडा है फिर भी जो फल माँगे वो सब दे देता है । ऐसा कवीश्वर देवुला पल्लि भाइयों में श्री वेंकट शास्त्री जी ने वर्णन किया है।

इस परम पवित्र क्षेत्र को कृतयुग में ब्रह्मा और देवेंन्द्र आदि देवताओं ने, त्रेतायुग में श्रीराम जीने, द्वापर युग में व्यास महर्षि, और कुंती और पांडव आदि लोगों ने तथा इस कलियुग मे श्री दत्तअवतार श्रीवल्लभ ने ऐसे कितने ही महात्माओंने दर्शन लेकर और इस पवित्र भूमिमे पाव रखकर इस क्षेत्र को और पुण्यकारी बनादिया। और पादगया (पिठापूरम) विश्वविख्यात हो गया। अगर भगवान की इच्छाहै तो इस तीर्थ क्षेत्र मे आपका आना होता है।

इस क्षेत्र में स्वामी तथा देवियों की शाश्वत पूजा केलिए अलग अलग पूजा प्रकार है।

## व्यास महर्षि का पिठापुरम् संदर्शन

द्वापर युगमे व्यास महर्षि अपने शिष्यों के साथ काशी क्षेत्र में रहते थे । एक बार अन्नपूर्णा माता और भगवान विश्वनाथ उन की परीक्षा लेना चाहते थे । महर्षि और उनके शिष्यों को कुछ दिन तक भिक्षा नहीं मिली । महर्षि व्यास और उन के शिष्य भूख से बहुत व्याकुल हुए। जब व्यास महर्षि से भूख बर्दाश्त न हुई तब वे क्रोधित हुए और काशी क्षेत्र को शाप देने केलिए उद्युक्त हुए।

अन्नपूर्णा का सदन होकर भी इस काशी क्षेत्र में मुझे और मेरे शिष्यों को भोजन नहीं मिला । ऐसे काशी क्षेत्र को मै भूमंडल से लुप्त कर दूँगा। ऐसा कहकर व्यास मुनीने शाप देने के लिऐ कमंडलु से हाथ मे जल ले लिया। तभी अन्नपूर्णा देवी



एक बुजुर्ग स्त्री के रुप में आकर ऐसा करने से व्यास महर्षि को रोक दिया और उन सब को पेट भर खाना खिलाया । उस के बाद अन्नपूर्णामाता और प्रभु विश्वेश्वर ने अपने निजी रुप में दर्शन दिये। प्रभू विश्वेश्वर ने कहा

**''न चमे क्रोध मुघ्घुष्टं बुध्दिर्भवति पार्थवाः''** ऐसे आप जैसे बडे , बुढे और बुजूर्ग को क्रोध नहीं आना चाहिए। आप जैसे अहंकारी इस काशी क्षेत्र में रहने के योग्य नहीं हैं। हम आप को क्षेत्र बहिष्कार की सजा दे रहे है। व्यास महर्षि ने तुरंत अपनी गल्ती को समझ कर क्षमा याचना की। यदि तुम भारत देश के सारे पुण्य क्षेत्रों का दर्शन करोगे तो तुम्हारा यह पाप नष्ट हो जायगा। तब भी तुम गंगा के उस पार ही रह सकोगे। जहाँ तुम रहोगे वह प्रदेश ''व्यास काशी'' कहलाएगा। ऐसा माता अन्नपूर्णा और प्रभु शंकर ने कहा। तब व्यास महर्षि ने उन दोनों को नमस्कार करके उन से बिदाई लेकर शिष्यों सहित तीर्थयात्रा के लिए चल पडे।

व्यास महर्षि ने तीर्थयात्रा करते हुए अनेकपुन्यक्षेत्रों का दर्शन किया और उन क्षेत्रों की महिमा का वर्णन करते हुए ५३ भागों में (खंडों) में स्कान्द पुराण की रचना की। काशी खंड , केदार खंड, गौरी खंड रेवा खंड आदि इस स्कांद पुराण के कुछ भाग है। इन में भीमखंड बहुत ही प्रमुख और प्रसिध्द है। इस में आँध्र प्रदेश के अरसविल्ली से लेकर अमरावती तक जितने पुण्यक्षेत्र हैं. उन सब का वर्णन इस भीम खंड में हैं। इस में खास कर तीसरे अध्याय में ३६ श्लोंको में पवित्र पुण्य क्षेत्र पिठापुरम का वर्णन किया गया है ।

अथा विंध्याचलोपान्ते त्रिलिगोत्कल देशयोः।
सिंधौसमीपे श्री भीम मंडलस्य पुरोत्तमम।।
नवखण्डान्विताखंड क्षोणी मंडल मंडनम्
नाना समृद्धि संपन्नम् विख्यातम क्षेत्रमुत्तमम्।।
केदार कुंभ कोणादि पुण्यक्षेत्र समम् महत।
पिठापूरम मुनिवरो निज शिष्यैस्सहा विशत।

यह क्षेत्र त्रिलिंग (तेलुगु) और उत्कल (ओरिस्सा) राष्ट्रों के सरहद में भीम मंडल के पूर्वभाग में सारे भूमंडल का शिरोमणि की तरह चमक रहा है। उधर उत्तर के केदार और दक्षिण के कुंभकोणम् पुण्यक्षेत्रों के समान यह पिठापुरम पुण्यक्षेत्र है। ऐसा व्यास महर्षि ने अपने ग्रंथ में प्रस्तुति की। अपने शिष्य समेत उन्होंने इस पुण्य क्षेत्र का दर्शन भी किया है। यह विषय ग्रंथस्तहै।

व्यास महर्षि विरचित ''स्कांद पुराण'' मे से 'भीम खंड'' को तेलुगु के प्रसिद्ध कवि -सार्वभौम श्रीनाथ ने तेलुगु में पद्यभाग मे ''भीमेश्वर पुराण'' के नाम से लिखा। उस प्रसिद्ध पद्यकाव्य में उन्होंने इस तरह लिखा है ।

**''कोणार्क क्षेत्रमु वारणासि**
**केदार तीर्थ राजंबु**
**कुंभ कोण कुक्कुटेश**
**स्थाणु स्थानंबु मोक्षधामंबुलेंदुन्''**

और

''कुक्कुटेश्वर''स्वामी का वर्णन श्री व्यास महर्षि ने इस तरह किया है।



**अथाभजत मौनीशो देवेशम भक्त वत्सलम।**
**विश्वात्मकं महाभागं शाश्वतम कुक्कुटेश्वरम्।।**

देवदेव शंकर भगवान सारी पृथ्वी को अपने में ही रखते है। उस परमात्मा शंकर की सेवा मै स्वयम् कर रहा हूँ। उनकी पूजा कर मै अपने जन्म को चरितार्थ कर रहा हूँ।

## श्री पुरूहूतिका शक्तिपीठ का महात्य

लंकायां शांकरी देवी - कामाक्षी कांचिकापुरे।
प्रद्युम्ने शृंखला देवी - चामुंडा क्रौंच पट्टणे।।
अलंपुरे जोगुलांबा - श्रीशैले भ्रमरांबिका।
कोल्हापुरे महालक्ष्मी - माहूर्ये एकवीरिका।
उज्जैन्याँ महाकाली - **पीठिकायाँ पुरुहूतिका**।।
औढ्याणे गिरीजा देवी - माणिक्ये दक्षवाटिका।
ज्वालायाँ वैष्णवी देवी - गयाँ मांगल्य गौरिका।
वारणस्याँ विशालाक्षी - काश्मीरेतु सरस्वती।
अष्टादशषु पीठेषु - योगि भिर्देव निर्मितम।।

श्री व्यास महर्षि ने अपने स्कांद पुराण में इन अष्टादश शक्तिपीठों का वर्णन किया है। श्रीलंका में शांकरी देवी - क्रौंच पट्टण में चामुंडा देवि और आलंपुरम में जोगुलांबा देवी , श्रीशैल क्षेत्र मे भ्रमरांबा देवी, कोल्हापुर में महालक्ष्मी देवी, माहूर मे एकवीरा देवी , उज्ज़ैनी में महाकाली देवी, पिठापुरम में पुरुहूतिका देवी, जाजिपुर में गिरिजा देवी, द्राक्षाराम में माणिक्यांब देवी हरिद्वार में मानासा देवी, प्रयाग में माधवेश्वरी देवी, ज्वाला में वैष्णवी देवी, गया में मंगलगौरी देवी, वारणसी में विशालाक्षी

देवी, काश्मीर में सरस्वती देवी ये अठारह शक्तिपीठ के नाम से प्रसिद्ध है।

इन शक्ति पीठों के आविर्भाव की कथा बहुत शेचक और पुण्य प्रदायनी है। पूर्वकाल में याने कृतयुग में चंद्रवंश वर्धन दक्षप्रजा पतिने अनेक दिव्यवर्षो तक आदि पराशक्ति की तपस्या की। उस की तपस्या से प्रसन्न होकर माता पराशाक्ति ने दक्ष प्रजापतिको दर्शन दिया। दक्ष ने प्रसन्न होकर माता देवी की बडी स्तुति की। तब माता पराशक्ति ने प्रसन्न होकर कहा, बेटा मै तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ। तुम एक वर माँग लो। तब दक्ष प्रजापति ने कहा - माँ! । तुम अपने अंश के साथ मुझे एक ऐसी बेटी दो जो शंकर भगवान की पत्नी बन सके।

अंबा ने ''तथास्तु'' कहा और अंतर्धान हो गई। कालक्रम में माता के अंश से दक्ष को एक पुत्री हुयी। दक्ष ने उस का नामकरण किया - सती देवी। सती देवी दिन दूने रात चौगुने दिन दिन प्रवर्धमान होने लगी। जब वह विवाह के योग्य हो गयी तो उस का विवाह शंकर भगवान से किया । सती देवी और शंकर भगवान अन्योन्य अनुराग के साथ वैवाहिक जीवन बिता रहे थे। कालक्रम में दक्ष प्रजापति मे अहंकार ने प्रवेश किया।

पूर्व में प्रयाग क्षेत्र में दीर्घकाल तक एक सत्रयाग चल रहा था । उस याग में भाग लेने केलिए समस्त देव और ऋषि गण वहाँ पधारे। उस याग के सर्वाध्यक्ष शंकर भगवान उन्नत स्थान पर आसीन थे। एक दिन जब सभा हो रही थी, दक्ष वहाँ आये थे। अहंकारी दक्ष चाहता था कि शंकर भगवान उन की खास खातिर दारी करे और शंकर अपने बगल में के आसन पर बिठाकर उन का गौरव बढाएँ। परमात्मा की दृष्टि मे सब समान



हैं। इसलिए शंकर भगवान ने दक्ष का आवभगत और आदर सत्कार करना उचित नही सम्झा । शंकर भगवान के बर्तावसे दक्ष बहुत क्रोधित हो गया। और उन्होंने मनमेही मनमे ऐसा तय किया शिवने किया अपमान का बदला लेलुंगा।

अहंकारी और गर्व से उन्मत्त दक्ष ने शंकर को नीचा दिखाने केलिए जिस में शिव को कोई, प्रमुखता न हो ऐसा एक निरीश्वर याग की योजना की। यज्ञ याग आदि क्रतुओं में दियेजाने वाले हविष्य भाग से देवता परिपुष्ट होकर संपूर्ण शक्ति मान बनते हैं। जब यज्ञ यागादि, क्रतुओं में देवताओं को हविर्भाग नहीं मिलता तब वे शक्तिहीन और दुर्बल हो जाते है। इस कारण वे देवताओं में अपनी प्रमुखता खो बैठते हैं।

दक्ष ने जिस निरीश्वर यज्ञ का आयोजन किया उस के लिए समस्त देवगण ऋषि मुनि, गरुड, गंधर्व, यक्ष, किन्नेर, किमपुरुष आदि सब को आमंत्रण मिलगये एक शंकर को छोडकर। वे सब यज्ञ में भाग लेने जा रहे थे। उस वक्त सतीदेवी कैलास में विहार कर रही थी तब कुछ देवतायें विमानसे जा रहे थे। देवताओंसे सतीदेवीने पूछा, ''आप सब कहाँ जा रहे है। कही महोत्सव पर जा रहे है क्या? देवताओंने कहा ''हे माँता! तुम्हारे पिता दक्ष प्रजापति यज्ञका आयोजन कर रहे है। हम सब वही जा रहे है।

सती देवी को अपने माईके से बहुत बडा प्रेम और अनुराग था। उसे अपने पिता से बहुत प्रेम था। दक्ष भी सती देवी से बहुत प्यार करते थे और वह उन की प्रियपुत्री थी। वह सोचने लगी कि पिताजी ने हमें क्यों आमंत्रण नहीं भेजा। शायद भूल गये होंगे। ऐसा सोचकर शंकर जी के पास जाकर बोली स्वामी सुना

है मेरे पिताजी यज्ञ कर रहे है हम भी उस में भाग लेने चलेंगे। इस तरह उसने शंकर जी से बहुत प्रार्थना की। लेकिन भगवान शंकर तो सर्वज्ञ थे। इसलिए उन्होंने सती देवी से कहा कि बिना आमंत्रण के नहीं जाना चाहिए। लेकिन सतीदेवी ने अपनी जिद नहीं छोडी। उस ने कहा - कम से कम मुझे भेज दीजिये। मै अपने पिताजी से कहकर आप को आहवान भिजवा दूँगी। सतीदेवी ने ऐसी बडी विनती की।

विधि का निर्णय टाला नहीं जा सकता - ऐसा सोचकर शंकर भगवान ने अपनी पत्नी सतीदेवी को अनुमति दे दी और नंदीश्वर आदि को साथ मे भेज दिया। सती देवी अपने पिता दक्ष प्रजापति के घर आयी। उस की माँ, भाई, बहुनें किसी ने उसे अंदर आने केलिए नहीं कहा। उस के बोलने पर भी किसी ने उस को जवाब नहीं दिया। सतीदेवी ने सीधा अपने पिता के पास जाकर पूछा ''पिताजी! आप जो यज्ञ कर रहे है, उस में शंकर जी को क्यों आह्वान नहीं दिया? शंकर जी के बिना यह यज्ञ विनाशकारी है। सर्वलोक शुभंकर शंकर की जिस यज्ञ में उपस्थिति नहीं है, यह आप केलिए शुभकर नहीं है। इस तरह सती देवी ने अपने बाप दक्ष को बहुत समझाया।

लेकिन दुर्बुद्दि दक्ष ने उन बातों की कोई परवाह नहीं की। बल्कि उस की निंदा की। इतना ही नहीं शंकर की भी निंदा की और उसे भला बुरा कहा। सती देवी ने विष्णु,ब्रह्म, देवेंन्द्र आदि देवताओं को भी दुतकारा । शंकर जी को जिस यज्ञ में हविर्भाग नहीं मिलने वाला है उस यज्ञ में आप कैसे आए? आप लोगों ने दक्ष को क्यों नहीं समझाया कि शंकर जी के बगैर यज्ञ



करना अनर्थ दायक है और दक्ष केलिए क्षेमकर और शुभकर नहीं है।

तब शिव भक्त दधीचि महर्षि ने देवताओं को चेतावनी दी। आप सभी लोगों की बेइज्जती होगी। यह बात तथ्य है। दक्ष को भी चेतावनी दी 'जरुर तुम्हारा विनाश होगा। इस यज्ञ का विनाश अवश्य होगा। अभीभी तुम शंकर से क्षमा माँगो और उन की शरण मे जावो। मूर्ख दक्ष ने दधोची की बात भी नहीं मानी। तुरंत दधीची उठ कर वहाँ से चले गये।

बेइज्जती से परेशान होकर सतीदेवी ने शाप दिया कि इस यज्ञ का विध्वंस हो जायगा और अपने प्राण वहीं छोड दिये। समस्त देवगण दक्ष परिवार और ऋषि मुनियों ने तिरस्कार किया। नंदीश्वर आदि जो सती देवी के साथ आये थे तिरस्कार करते हुए जा कर शंकर को सती देवी की मृत्युकी वार्ता सुनाई। शंकर ने कोपित होकर प्रलय तांडव किया और अपने जटाजूट से एक लडी निकाल कर भूमि पर मारी तो उस मे से भद्रकाली और वीरभद्र का प्रादुर्भाव हुआ।

शंकर भगवान ने वीरभद्र और भद्रकाली तथा समस्त प्रमथगणों को आज्ञा दी कि ''जाओ - दक्ष यज्ञ का विध्वंस कर दो। शिव की आज्ञा के अनुसार उन्होंने यज्ञ के स्थानपर देवता और ऋषि मुनियों को भगा दिया और जो बीच में आनेवाले का संहार कर दिया । दक्ष का सिर भी काट दिया और यज्ञकुंड मे डालकर भस्म कर दिया।

पतिव्रता दक्ष की पत्नी की प्रार्थना से शंकर ने दक्ष के धड को बकरे का सिर जोड कर दक्ष से यज्ञ पूरा करवाया। सती

देवी से शंकर को जो प्रेम था उस से उस के मृत देह को अपनी भुजाओं पर रखकर, विरागी बनकर, सती देवी के विरह वेदना से व्यथित हो कर लोक संचार करने लगे।

उसी समय में तारकासूर नामक राक्षस ने ब्रह्मा की तपस्या की, और वरदान पाया कि शिव वीर्य समुद्भव और अयोनिज अग्नि गर्भ से छः रुपों में पैदा होकर छः कन्याओं के दूध से पाल पोस कर बडा होकर एक रुप धारण करने वाला ही मुझे मार सकेगा नहीं तो मै चिरंजीवी बन कर रहूँगा। लोक कंटक तारकासूर का संहार करना है तो शंकर भगवान मेनका और हिमवंत की पुत्री बनकर जन्मी हुयी पार्वती देवी से विवाह करेंगे तो कुमारस्वामी का जन्म होगा और वे ही इस दुष्ट राक्षस तारकासुर का संहार करेंगे। ऐसा सोच कर देवताओं ने पराशक्ति से प्रार्थना की। आदि परशक्ति ने प्रकट होकर उन से कहा, हे देवताओं! तारकासुर का वध होना चाहते हो तो पहले शंकर को विरहोन्मुख करना चाहिए। ऐसा होने केलिए श्री महाविष्णु को अपने चक्र से सती देवी के मृत-शरीर का खंडन करना चाहिए। तब शंकर सती देवी के विरह बाधा से विमुक्त हो कर पार्वती पति बन कर लोक कल्याण करेंगे। ऐसा कह कर आदि पराशक्ति अंतर्धान हो गयी।

माता पराशक्ति की आज्ञा से श्री महाविष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती देवी के मृत शरीर के टुकडे टुकडे कर दिये। सती देवी के देह भाग अलग अलग जगह पर गिरकर, १०८ शक्ति पीठ के रुप में विख्यात होकर, भक्तजनों से नित्य कुंकुमार्चन और नीरंजन से सुशोभित है।



उन में भी प्रधान पीठ भाग जो पिठापुरम में गिरा वो पीठ भाग का अधिष्ठान देवता होने से यहाँ माता जी पीठिकांबिका के नाम से पुरुहूत(देवेन्द्र) से अर्चित होकर उसे अनुग्रहीत कर के उस की इच्छा के अनुसार 'श्रीपुरुहूतिका देवी के नाम से प्रसिद्ध हुयी। और जगहका नाम पीठिकापुरम् पडा।

**तत्र पीठाम्बिकां शक्तिं कैटभान्तक वल्लभाम।**
**वरदातु पुराभ्यर्थ शृंगाटक महिस्थिताम।।**
**हिरण्मयम् पान पात्रं सुपक्कम् मातुलंगकम।**
**खेटकम् लोहदडंच धारयन्ती करांबुजैः।**
**सर्व लोकैक जननीं लक्ष्मीं भक्तयाँ ननामसः।।**

ऐसा स्कांद पुराण के भीम खंड में श्रीव्यास महर्षि ने माँ का वर्णन किया है। जिस को तेलुगु में कवि सार्वभौम श्रीनाथ ने इस प्रकार वर्णन किया।

**हाटक पान पात्रयु नारग बंडिन मातुलुंगमुन्**
**भेटमु लोह दंडमु नोगिन् धरिंचि पुरोपकंठ**
**शृंगाटक भूमि भागमुन कापुरमुंडेडि पीठिकांबकुन्**
**कैटयदैस वैरि दैत्य प्रिय कान्तकु नमस्करिचे नातडु भक्ति तोन।।**

पिठापुर वासिनि पीठांबिका कहलाने वाली पुरुहूतिका देवी के वाम (दाया) हस्त के नीचे सोने का पात्र , दक्षिण हस्त में पूरा पका हुआ मादीफल, वाम हस्त के ऊपर ढाल और दक्षिण हस्त में लोहे का दंड धारण कर चौराहे पर श्री चक्र पीठ पर आसीन हो कर सकल भक्त जनोंको सारे सौभाग्य और समस्त धन धान्य इत्यादि प्रदान करती हैं। श्री पुरुहूतिका देवी भक्त जनों

के कल्पवल्ली हैं। उसे जो निर्मल मन से प्रार्थना करता है उसे आयुरारोग्य और अष्ट ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते है। ऐसी करूणामयी है यह पुरूहूतिका माता ।

पिठापुरं का दर्शन करने केलिए हिमालय से पुराने जमाने में एक महात्मा पुरुष आये थे। उन्होंने सतीदेवी के शरीर के अंग कहाँ कहाँ गिरे है। उस का वर्णन इस नीचे दिये हुए प्रकार से बताया है।

१) बाँया कान :- श्रीलंका - क्यांडी दबुला - शांकरी देवी।
२) बाँई आँख :- कांचीपुरम् - तमिलनाडु - कामाक्षी देवी
३) बाँया हाथ :- प्रद्युम्नं (चोटिल्ला - गुजरात) शृंखलादेवी
४) दायाँ हाथ :- क्रौंच पट्टणम (कर्नाटका) चांमुंडेस्वरी
५) दायाँ कान :- आलमपुर - आंध्र - जोगुलांबा देवी
६) बायाँ पैर :- श्रीशैलम - आंध्र - भ्रमरांबा देवी
७) नाक :- कोल्हापुर - महाराष्ट्र - महालक्ष्मीदेवी
८) कंठ :- माहूर - महाराष्ट्र - एकवीरा देवी
९) जीभ :- उज्जैन - मध्यप्रदेश - महाकाली देवी
१०) पीठ भाग :- पिठापूरम् - आंध्र - पुरुहूतिका देवी
११) कमर :- जाजिपुर - उडिसा - गिरिजा देवी
१२) नाभि :- द्राक्षारामा - आंध्र - माणिक्यांबा देवी
१३) हृदय् :- हरिद्वार - उत्तरांचल - मानसा देवी
१४) दाया पैर :- इलहाबाद - यु.पि - माधवेश्वरी देवी
१५) मूँह :- जम्मू - (जम्मूकाश्मीर) - वैष्णो देवी
१६) स्तन :- गया - बिहार - मंगल गौरी देवी
१७) दाँयी आँख :- वाराणाशी - यु.पि - विशालाक्षी देवी



१८) कपाल :- श्रीनगर (जम्मू कास्मीर) सरस्वती देवी

ये अठारह अति प्रमुख शक्ति पीठ है। इन के आलावा भी अनेक शक्ति स्थान है. ऐसा महात्माओं का कहना है। शक्ति पीठ संदर्शन अंत्यत शुभप्रद है।

सूचना :- श्री पुरुहूतिका देवी के मंदिर के प्रांगण में १८ शक्तिपीठों के विग्रह है। ये सब उन उन क्षत्रों के असली विग्रहो के नमूने बना कर रखे गये है। भक्त जनों से विनंती है कि उन का दर्शन करें और अपना जन्म चरितार्थ कर लें। अपनी इच्छासे यहाँ शाश्वत पूजा का प्रबंध किया जाता है।

## पीठिकापुर क्षेत्र - दत्त महात्या

**कृते जनार्दनो देवः त्रेताया रघुनंदन ।**
**द्वापरे रामकृष्णौ च कलो श्रीपादवल्लभः।।**

श्री वासुदेवानंद सरस्वति स्वामीजीने ''श्री गुरू चरित्र'' के पाँचवें अध्याय में 'श्रीपाद श्रीवल्लभ'' का जन्म वृत्तांत वर्णन किया है। इस पिठापुरम में आपस्तंभ शाखा भरद्वाज गोत्र के राज शर्मा और सुमति देवी नाम के ब्राह्मण दंपत रहते थे। उन के दो बेटे थे जो अंधे और लंगडे थे। उन दिनों में अंग वैकल्य वालों के विवाह नहीं करते थे। ऐसे संतान से वंशाभिवृद्दी नहीं हो सकती। इस लिए वे दंपत संतान पाने की इच्छा से पादगया क्षेत्र में जो दत्तात्रेय स्वामी हैं उन की पूजा करते थे।

महालय आमवस्या का दिन था। राजशर्मा पितृश्राध्दके तयारी मे थे और भोक्ताओं को निमंत्रण दे रखा था। दरवाजे पर ''भवति भिक्षांदेही'' ऐसा आवाज सुनकर सुमती देवी ने एक

खडे रहे अवधूत को भिक्षा दे दी। उस समय राज शर्मा कुक्कटेश्वर प्रांगणमे स्नानादि पूर्वकर्मा के लिये गयै थे। दत्तभगवान अवधूत का वेष धारण कर के उनकी परीक्षा ले रहे थे।

पिठापूरम को पांचालपूरम नामसे भी पुकारा जाता था। त्रिमूर्ति स्वरूप दत्तात्रेय भगवान किसी न किसी भेष मे पिठापूरम मे दोपहर के काल मे भिक्षा लेनेके लिये हर रोज आते है। यही सबका विश्वास है।

ऐसी रीती रिवाज है, अगर घरमे पितृकार्य हो तो भोक्ताओं के खाये बिना किसीको खाना या भिक्षा नही दी जाती। अगर ऐसा होता है तो पितृ देवताखाये बिना वापस लोट जाते है।

अपने पति घरमे नहीं भिक्षा तो देनी ही चाहिए लेकिन भोक्ताओं के भोजन के पहले खाना देना ठीक नहीं फिर भी याचक रिक्त हात लौटेगा और सारे वंशके पूर्वज नरक मे जाएँगे यही सोचकर सुमति देवी ने सन्यासी को भिक्षा दी। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर स्वामीने उन्हें अपने निज रुप का दर्शन करवाया और कहा ''अम्मा! तुम्हें जो वरदान चाहिए मांग लो।

सुमति देवी ने स्वामी को नमस्कार करके कहा, आप ने मुझे माँ कहकर पुकारा । इस संबोधन को सत्य बनाने केलिए आप मेरे पुत्र बन कर मेरे गर्भ से जन्म लेने का वर देने की कृपा करें। उस केलिए स्वामीजी ने एक छोटी सी शर्त रखी। ''तुम्हारा बेटा जो भी चाहेगा उसे मना मत करना ''ऐसा कह कर स्वयम् उन के घर में जन्म लेने के वरदान दे कर वे अंतर्धान हो गये।

जब राज शर्मा घर वापस आये तब सुमतीदेवी ने जो घटना घटी वो सारी उन को बतायी। राजशार्मा बोले। सुमती ! तूमने बहुत अच्छा काम किया है । पित्रु कर्मा करने के बाद जिस



भगवान को हम समर्पण करते हैं, वही स्वयंम् आकर भिक्षा स्वीकार करना बहुत ही पुण्यदायक है। हमारे सारे पूर्वजों का उध्दार होगया। मै बहुत प्रसन्न हूँ। इस तरह उसने सुमतीदेवी का अभिनंदन किया।

## कलियुगमे भगवान दत्त का पहला अवतार

कुछ दिनों के बाद सुमतिदेवी गर्भवति हो गयी। उस समय एक रात को बडी अजबसी घटना घटी। प्रसिद्ध महाशक्ति पीठ मे पुरुहूतिका माता के मंदिरमे से एक नागीनी सुमतिदेवी के घर मे आकर, घरकी प्रदक्षिणा करके , सुमतिदेवी के कमरे मे प्रवेश करके, उनके बिस्तर को तिन बार प्रदक्षिणा करके, तथा उनकी गर्भपर फणा डभारकर फूंकार कर के चली गयी। इसी प्रकार हररोज दिनतक यह प्रकार चलते रहा। और एक दिन राजशर्मा ने यह चमत्कार अपने आँखो से देखा। और यह बालक कोई सामान्य बालक नहीं यह वो जान गये। नवमास पूरे होने पर भाद्रपद शुद्ध चतुर्थी के शुभ दिन को स्वामी ने उन के घर में जन्म लिया। पैदा होते ही राजशर्मा ने जातकर्मा आदि के उपरांत १० वे दिन नामकरण का संकल्प किया। पंडितों ने बालक के पाद और हस्त रेखाओं को देख कर कहा इस बच्चे के पाँव में श्री रेखा है इसलिए इस बालक का नाम ''श्रीपादुडु'' रखना उचित होगा। इतना ही नहीं यह बालक सामान्य नहीं है। यह महा योगी है - सर्व विद्या पारंगत और जगत गुरु बनेगा। इस की वजह से आप को और आप के वंश को बहुत बडा नाम होगा कीर्ति और प्रतिष्ठा होगी। ऐसा कहकर उन पंडितों ने बच्चे को आशीवार्द दिया।

राजशर्मा ने उन ब्राह्मण पंडितों का विशेष सत्कार किया और बच्चे के जन्म दिन महोत्सव को बडे धूम धाम से मनाया । बालक के रुप में ही स्वामी ने कई विशेष लीलाएँ दिखाई । आठ साल की उम्र में जब स्वामी का उपनयन किया गया उसके पहले वे वेद वेदांगों की विद्या में पारंगत हो गये थे। उद्दंड पंडितो के जटिल प्रश्नों के समाधान वे बडी आसानी से देते थे। विद्यार्थियों को वेद पाठ पढाते थे।

जब स्वामी १६ साल के हुए तब माता पिताने उन के विवाह प्रयत्न प्रारंभ कर दिया। लेकिन स्वामी जी ने उन्हें मना कर दिया। तब सुमती देवी ने कहा - बेटा ! तुम्हारे दोनों बडे भाई अंधे और लंगडे है। इसलिए उन से वंश की वृद्धि नहीं हो सकती । इसलिए तुम विवाह करो और वंश की वृद्धि करो और हमें उत्तम लोकों की प्राप्ति कराओ। यही हमारी बिनती है।

उन की बातें सुनकर स्वामी जी ने कहा, माताजी और पिताजी ! मै सामन्य मानव कांता से विवाह करने वाला नहीं हूँ। मुक्ति कांता जो योग श्री है उसी से मै विवाह करुँगा। (यानी सन्यास स्वीकार करुँगा) यदि मेरे बडे भाई दोनों परिपूर्ण स्वस्थ हो तो मेरे संन्यास लेने में आप को कोई आपत्ति नहीं होगी न? वे मुझ से बडे हैं। उन से वंश की वृद्धि हो तो आप को कोई आपत्ति नहीं है न? ऐसा कहकर सुमती देवी को फिर एक बार अपना निज स्वरुप श्री दत्त अनघालक्ष्मी के साथ दर्शन देकर पहले उस ने जन्म लेने के लिए जो शर्त लगायी थी उस की याद दिलायी।

सुमती देवी ने स्वामी को जी भर के देख कर उन की बडी स्तुति की। यदि मेरे बडे पुत्र दोनों स्वस्थ हो जाये तो आप



के सन्यास लेने से मुझे कोई अपत्ति नहीं है। और मै आप को इस के लिए अनुमति देती हूँ। स्वामी ने अपने दोनों भाईयों को अपने दिव्य कर स्पर्श से और कृपा दृष्टि से बिल्कुल स्वस्थ बनाकर दोनोंको महापंडित बनाया।

सुमती देवी से स्वामी श्रीपाद ने कहा आप दुखी न हों। आप का वंश आचंद्रतारां तक सुखी और समृद्धिशाली रहेगा। आप के वंश से वेद आदि विद्याओं की बोल बाला होगी।

हमेशा आप के घर में धन और धान्य की समृद्धि रहेगी। किसी चीज की कमी नहीं होगी । यह मेरा वरदान है और कहा, ''मुझे जो स्मरण करते हैं और मेरी पूजा अर्चना करते है उन को समस्त धन धान्य और सुख शांति से समृद्ध बना दूँगा। उन के सारी इच्छाओं की पूर्ति करुँगा । इस क्षेत्र में स्वामी ने सुमतीदेवी को जिस रुप में दर्शन दिया था उसी रुप में स्वयंभू के रुप में मै यहाँ रहूँगा और भक्त जनों का रक्षण और उद्धार करता रहूंगा।'' ऐसा कह कर स्वामी ने सन्यास ले लिया और उत्तर दिशा की ओर चल दिये। कई पुण्य क्षेत्रों का दर्शन करके उन प्रदेशों में दत्त भक्ति की भावना जगाई।

कुरुपुरमु (कुरुगड्डा) जो कृिष्णा नदी के बीच में है। स्वामी कृष्णा नदी के पानीके उपर चलकर नदी पार कर लेते थे। जो बहुत आश्चर्य जनक दृष्य था लोग आचबीत होते थे। स्वामी बहुत सालतक वहा रहे। कुरूगुड्डी मे एक धोबी रहता था, जो हमेशा स्वामी की सेवा मे लगा रहता था। इस धोबी को स्वामीने अगले जन्म मे राजा बनने का वरदान दिया। और वो राजा बनगये। स्वामी के अगले अवतार है नरसिंह सरस्वती जो गाणगापुर

मे है। वह राजा स्वामी के इस आवतार मे भी दर्शन कर सका। अंबा नामकी एक रत्री की अल्प बुध्दी पूत्र को विद्यावान बनाया। और उस अम्मा को वरदान दिया कि, अगले जन्म में उस का पुत्र बनकर जन्म लूंगा और वही मेरा नरसिंह सरस्वती अवतार होगा। ऐसा कहकर उन्होंने अपनी इस अवतार समाप्त करने पर भी चोरों ने वल्लभ नाम के जिस ब्राह्मण की हत्या कर दी थी स्वामी स्वयम् फिर प्रकट हुये और उस ब्राह्मण को प्राण दान दिया। इतना ही नहीं आज भी वे हर रोज पादगया क्षेत्र का दर्शन करने वाले भक्तों की इच्छाएँ पूरी करते हैं। कहा जाता हे कि आज भी स्वामी किसी न किसी रुप में पिठापुरम दोपहर आकर भिक्षा लेते हैं। यह कुछ भक्तों का स्वानुभव है। महात्मा योगियों, तपास्वियों को और तपोधनों को स्वामी अपने निज स्वरुप से दर्शन देते है। और जो सामान्य भक्त हैं और उन की पूजा करते हैं वे किसी न किसी रुप में आकर उन से बात करते हैं। और इनकी मदत करते है। यह स्वामी की विशेषता है।

श्रीपाद श्रीवल्लभ करुणा के समुद्र हैं। उनकी दया की कोइ हद नहीं है। उन की लीलाएँ अत्यंत आश्चर्य जनक है। स्वामी के सान्निधि में मालाधारण करके जो मंडल दीक्षा लेते है उन की सारी इच्छाएँ जरुर पूरी हो जाती हैं। मंडल दीक्षा कार्तीक शुद्ध व्दिताया से लेकर मार्ग शीर्ष शुद्ध पूर्णिमा तक होती है । जो स्वामी के सान्निध्य में श्रीगुरु चरित्र सप्ताह तक पारायण करते हैं उद्योगार्थियों के उद्योग और विद्यार्थियों को विद्या लाभ, विवाहार्थियों को विवाह, रोगियों को संपूर्ण स्वास्थ्य, व्यापारियों को धनलाभ होता है। स्वामी की प्रदक्षिणा मंडल दिन हर दिन १०८ बार करने वालों की सारी इच्छाएँ पूरा हो जाएँगी।



सूचना :- इस मंदिर में स्वामी की पूजा करवाने केलिए शाश्वत पूजा प्रकार है। अधिक जानकारी केलिए देवस्थान के अधिकारियों से पूछे और आवश्य लाभ उठयें।

## एलानदी का महत्व

परम पिता विस्वेश्वर ने काशीक्षेत्र से बहिष्कृत किये व्यास महर्षि अपने शिष्य समेत भीम मंडल के दर्शन के लिए चल पडे। दक्षिण काशी के रुप से विख्यात पुण्यक्षेत्र पिठापुरम का दर्शन करके एलानदी में स्नान किया ।

**एला नदी वियद् गंगा स्वर्ग श्रीपिठापुरम।**
**अहो एलानदी तस्या अन्या नद्यः कुतः समाः।।**

इस की प्रशंसा उपर्युक्त श्लोक में कियी है। गौतम महर्षि और एला ऋषियों पर गोहत्या का आरोप किया गया। इस पाप से विमुक्त होने के लिए दोनों महर्षियों ने तपस्या की। इन में गौतम महर्षि ने शिवजी को प्रसन्न करके गंगा को भूमि पर ले आये वही आज 'गोदावरी' के नाम से प्रस्द्धि है।

अप्सरसाओं के मोह में पड कर एलामहर्षि का तपोभंग हो गया । गौतम महर्षि से उन्होंने प्रार्थना की उन की नदी मे से एक छोटी सी झरनी उन्हें देदे तब गौतम महर्षि ने कहा । सागर में जिस नदी ने संगम कर लिया वह तुम्हें कैसे रास्ता देगी? यह सुनकर एला महर्षि ने कठोर तपस्या करके परमेश्वर को प्रसन्न कर लिया और उनके जटाजूट के गंगा में नहा कर अपने पापो से मुक्ति पायी । उन्होंने शिवजी से वरदान माँगा कि 'मेरे नाम से एक नदी बहे' । शिव ने कहा तुम जिस रास्ते में इस किम्मीर सीमा में जाओगे यह गंगा तुम्हारे पीछे पीछे आयेगी। और तुम

जहाँ रुक जाओगे यह गंगा भी वही रुक जायेगी।

एला महर्षि नदी को समुद्र से संगम करने के लिए ले जा रहे थे। जब पाद गया क्षेत्र से गुजर रहे थे उन्होने मुर्गेकी बाँग सुनी । अब सुबह होने वाली है ऐसा सोच कर एलामहर्षि इसी क्षेत्र में रुक गये। और नदी भी यहा तक आकर रुक गयी।

जी नदी का सागर में संगम नहीं होता, अपने वह पति को छोडकर आयी हुयी स्त्री जैसी है। इसलिए यह नदी पिंड प्रदान केलिए उपयुक्त नहीं है - महर्षि ऐसा सोचने लगे। तब परमेश्वर ने दर्शन देकर कहा, नैमिशारण्य में किम्मिरासुर ने मुझ से एक वर माँगा था। उस की इच्छा पूरी करने केलिए ही मैने मुर्गी का रुप घारण किया था।

हे एलामहर्षि ! तुम जिस नदी जल को गयासुर के पाद (पाँव) जहाँहै, उस पुण्य क्षेत्र में ले आये हो। यहाँ के पवित्र जल में जाने से मिल दोष रहित और पवित्र हो गयी है। वो नदी यह नदी तुम्हारे नाम पर से ही ''एलानदी'' कहलाएगी और बहुत प्रसिद्धि पायेगी। ऐसा परमेश्वर ने महर्षि को वरदान दिया । उस दिन से आज तक एला नदी इस पूष्करणी मे भक्त जनों को पुनीत कर रही है।

## पादगया संदर्शन विधि विधान

सर्व पापों का हरण करने वाला पिठापुरम् का पादगया पुण्य क्षेत्र बहुत ही प्राचीन है। देवस्थान के उत्तर दिशा के महाराज गोपुरम के द्वार से मंदिर में प्रवेश करना यहाँ का रिवाज है। महाराज गोपुरम बहुत ही सुंदर शिल्पों से भरा हुआ है और मनोहरी है। राज गोपुरम से अंदर प्रवेश करते ही ध्यान मुद्रा में सिथत शंकर भगवान हमें दर्शन देते हैं। स्वामी के दर्शन करते



ही पीछे की और है परम पवित्र पादगया पुष्करिणी। गयासुर के पाँव जिस में हैं वही पुण्य तीर्थ। इस पुष्करिणी में स्नान करने से या इस के पवित्र जल को सिर पर छिडकने मात्र से भक्तजनों को मुक्ति मिल जाती है।

मुख्य मंदिर प्रांगण में पैर रखते ही ध्वजस्तंभ है और उस के बगल में ही गयासुर के प्राचीन पाद मुद्रिकाएँ हैं। उन का दर्शन करके गयापाद तीर्थ को सिर पर छिडक लेना चाहिए।

उस के बगल में ही आग्नेय दिशा में पितृमुक्तिकर गयापाद - विष्णुपाद मुद्रिकाओं का मंदिर है। बडी पादमुद्राएँ गया की और छोटी पादमुद्राएँ विष्णु की हैं। इन्ही पादमुद्राओं के ऊपर ही अपने स्वर्गस्थ पितरों की मुक्ति केलिए भक्त जन पिंडप्रदान और तर्पण आदि करते हैं। बिहार के गया में सिर्फ विष्णुपाद मुद्रिकाएँ हैं। यहाँ गयासुर के पाद मुद्रिकाएँ और विष्णु पाद मुद्रिकाएँ होना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी लिए यहाँ पित्रु कार्य करना बहुत महत्व पूर्ण माना जाता है।

इस छोटे मंदिर के बगल मे प्रथमपूजा के अधिकारी श्री सिद्धि गणपति का मंदिर है। ये स्वामी मुक्त वाहन पर सवार शिखा और यज्ञोपवीत धारण कर के अपना भव्य दर्शन देते है। ये सिद्धि प्रदाता हैं। दोनो का साय होना यहाँ गणपति नव रात्रि उत्सव (गणपती उत्सव) बडे धूमधाम से मनाई जाता है।

विनायक जी की पूजा करने के बाद त्रिमूर्ति स्वरुप अत्रि अनसुया के पुत्र श्री दत्तात्रेय स्वामी का मंदिर है। इसी क्षेत्र में सुमती राणी और राज शर्मा को अनुग्रहीत करने केलिए स्वयं श्री दत्तात्रेय श्रीपाद श्रीवल्लभ के नाम से अवतरित हुए । स्वामी का दर्शन करने केलिए इस पुण्य क्षेत्र का दर्शन करने हजारों दत्तभक्त विदेश के कोने कोने से आते हैं। विशेष रुप से महाराष्ट्र, कर्नाटक और गुजरात से ज्यादा भक्त जन यहाँ आकर स्वामी का दर्शन करते है। उनमे एन्.आर्.आई भी होते है।

पादगया ही ऐसा एक मात्र पुण्यक्षेत्र है जहाँ विग्रह मूर्ति के रुप में श्रीदत्त भगवान विद्यमान हैं। बाकी सब दत्तक्षेत्रों में स्वामी की पादुकाएँ ही दर्शन देती हैं। स्वामी के मंदिर के बगल में ही तीन शाखाओं वाला औदंबर वृक्ष खडा है जो बडा महिमान्वित है। कोई भी पेड बगैर पुष्प के फल नहीं देता । लेकिन यहाँ का यह औदंबर पेड बिना पुष्पों के ही फल देता है। इसी पेड के उत्पत्ति स्थान में स्वामी के निजी पादुकाएँ हैं जिन के स्पर्श मात्र से भक्त जनों का जन्म धन्य हो जाता हैं। पेड के निचे श्रीवल्लभ स्वामी जी की मुर्ति है। दत्त जयंती महोत्सव मार्गशिर मास में एक हप्ते महोत्सव तक मनाया जाता है। भाद्रपद मास के चतुर्थी में श्रीपाद वल्लभ जयंती सप्ताह महोत्सव भी बडी धूम धाम से मनाया जाता है। इन महोत्सवों को जरुर देखना चाहिए। दत्त मंदिर के पीछे दत्त वृंदावन मंदिर है। श्रीपाद श्रीवल्लभ स्वामी, नरसिंह सरस्वती, स्वामी -समर्थ, माणिक प्रभु, शिर्डी साईबाबा ये दत्तके कलियुग के अवतार माने जाते है। उनके दर्शन से गाणगापूर अक्कलकोट,शिर्डी और हुमनाबाद जाने का पुण्य प्राप्त होता है।

दत्तस्वामी के दर्शन के बाद बगल में सपरिवार सहित जो **श्री रामचंद्र** जी हैं उन का दर्शन करना चाहिए। इस स्वामी का उत्सव श्रीराम नवमी के दिन बडी धूमधाम से मनाया जाता है।

श्री **जगद्गुरु शंकराचार्य** श्रीसीता रामजी के बगल में ही स्थित हैं। इन का दर्शन ज्ञानप्रद हैं। वैशाख शुद्द पंचमी के दिन शंकर जयंती वैदिक पद्दति से श्रद्दा पूर्वक मनायी जाती है।

बगल में हरिहर पुत्र **अय्यप्पस्वामी** का मंदिर है जिस का दर्शन अवश्य करना चाहिए। इस अय्यप्पा स्वामी मंदिर में विशेष रुप से माला धारण करते है। बगल में ही **विश्वेश्वर** स्वामी और **अन्नपूर्णादेवी** के मंदिर हैं। इस मंदिर में वैशाख शुद्द एका दशी



से पाँच दिन तक स्वामी का कल्याणोत्सव मनाते हैं।

यहाँ एक **नव ग्रहों का आलय** भी है। हर शनिवार के दिन सैकडो की संख्या में और शनित्रयोदशी के पर्वदिन में हजारों भक्त जन नवग्रहों की पूजा करते हैं तैलाभिषेक भी करते है। हर दिन नवग्रह जप और होम आदि भक्त जन करते है।

मंदिर की वायुव्य दिशा में **श्री सुब्रह्मण्येश्वर** का आलय है। यह बहुत ही प्राचीन है। कुज दोषी संतानापेक्षी जिन का विवाह अभीषेक कर के लाल फूलों से विशेष पूजा कर मन का अभीष्ट सिद्द कर लेते है। इस के कई निदर्शन पाये गये ।

उत्तर भाग में शिव ध्यान में मग्न **चंडीश्वर** की सुंदर मूर्ति दिखाई देती है जिसे देखते ही हमारे मन में भक्ति की भावना जागृत हो जाती है। भक्तजन इस स्वामी का तीन बार प्रदक्षिणा कर के तीन बार ताली बजाते हैं। क्यों कि ये हमेशा शिव ध्यान में मगन हो कर 'ओंकार' का जप करते रहते है। जब हम ताली बजाते हें तब चंडीश्वर शिव जी से हमारा आगमन बताते है। तब ईश्वर की कृपा हम पर प्रसारित होती है।

इस के बाद **दुर्गा देवी** का दर्शन करना चाहिए। 'पीठांविकाया स्सखी दुर्गा रक्षा परतया निशम'। व्यास महर्षि ने ऐसा इन का वर्णन किया है। इस माँ देवी की पूजा हर शुक्रवार को भक्त जन विशेष रुप से करते है। भक्त जन यहाँ माला धारण करते है।

इस मंदिर के बगल में १८ शक्ति पीठों से युक्त **'श्री पुरुहूतिका'** शक्ति मंदिर का दर्शन भक्त जनों को अनिर्वचनीय आनंदानुभूति को प्रदान करती हैं। माँ देवी को हर साल से उगादि १० दिन बहुत ही वैभवो पेत से शतचंडी याग और वसंत नवरात्रि में आयोजन करते है। इस में संकीर्तन, भजन, वेद पारायण बडे धूमधाम से होते है।

दशहरे की नवरात्री भी बडे भव्य ढंग से मनाये जाते है। कहा जाता है कि हर मनुष्य को अपने जीवन में कम से कम एक बार श्री पुरुहूतिका माँ का दर्शन कर अपने जन्म को सार्थक बनाना चाहिए। **पिठापुरम की पुरुहूतिका शाक्ति पीठ अद्वितीय माना जाता है।**

यहाँ का क्षेत्र पालक मंदिर के ईशान्य भाग में है **'कालभैरव'** व्यास महर्षि ने कहा कि 'ब्रीडा शून्य कटिर्देव स्तिष्ठति क्षेत्र पालकः इस दिगंबर काल भैरवका दर्शन अत्यंत आवश्यक है।

उस के बाद प्रधान मंदिर के नंदी मंडप में जो **नंदी** है वे सब के मन को हर लेने वाली सुंदर मूर्ति हैं। वे सब को आकर्षित कर लेते है। बडे बुजुर्गो का कहना है कि लेपाक्षी के बाद इतनी सुंदर मूर्ति और कोई नहीं है। स्वाक कर इस सालग्राम निर्मित एक शिला मूर्ति को छूंकर एकाग्र चित्त हो ध्यान करें तो जीवनाडी स्पंदन मालूम होता है। **नंदीश्वर** की पूजा करने के बाद ही प्रधान आलय में पैर रखना चाहिए।

अंतरालय में प्रवेश करते ही गयासुर के संहार केलिए जिस शिवजी ने मुर्गेका रुप धारण किया था वही **शिव कुक्कुट लिंग** रुप में स्वयम् भू के रुप में आविर्भूत हुए यहाँ स्वामी को एकाग्रता से ध्यान करने से अलौकिक आध्यात्मिक भावना में खो जाते है। व्यास महर्षि ने स्वामी का इस तरह वर्णन किया है। ''अधा भजत मौनीशो देवेशं भक्तवत्यॉसलम विश्वात्म कम् महाभागं शाश्वतम् कुक्कुटेश्वरम''। देवताओं का प्रभू भक्तवत्सल अपने में सारे जगत को जिस ने समा लिया है उस महानुभाव को जो सत्य है जो नित्य है मै उस **कुक्कुटेश्वर** स्वामी को नमस्कार करता हूँ। इस तरह उन्होंने स्कांद पुराण में लिखा था। स्वामी के बगल में जो माँ हैं उन को हंकारिणी देवी कहते है।



''हूँकारिणी महाशक्ति मसेवित शिवप्रियाम'' कुक्कुटेश्वर स्वामी की प्रिय पत्नी माँहुंकारिणी ने धूम्र लोचन नामक राक्षस को हूँकार मात्र से मार डाला था। इसलिए ये माता **हूंकारिणी देवी** के रुप में इस क्षेत्र मे विराजमान है।

जो भक्तजन शिवा और शिव का दर्शन करलेते है उन्हें स्वामी के वाम भाग में जो उपालय है उस में जो श्री **राजराजेस्वरी देवी** हैं उन का दर्शन करना चहिए। इस माँ का भी भक्त जन हर रोज कुंकुमार्चन बहुत करते हैं। हर शुक्रवार और पूर्णिमा के दिन विशेष पूजाएँ और मास शिवरात्री के दिन लाख कुंकुमार्चन करते है।

शरन्नव रात्रियों मे श्री राजराजेस्वरी माता जी का विशेष रुप से अलंकरण करके ९ दिनों तक पूजा करते है। इन नौ दिनों में बडे धूमधाम के साथ अन्नदान किया जाता है।

इस क्षेत्र में जो उत्सव होतै है - उनका विवरण

''उगादि'' तेलुगु संवत्सरादिः- इस संदर्भमें श्रीकुक्कुटेश्वर स्वामी की सन्निधि में ''उगादि पूजा'' और पंचांगों का वितरण किया जाता है। पच्चडि (चट्नी) को प्रसाद रूपसे बाटा जाता है।

यह पुरुहूतिका माता का शक्तिपीठ है। उगादि के दिन यहाँ कलश स्थापन कर के पंचाँग श्रवण किया जाता है। बाद मे पंडितों का सत्कार किया जाता है। श्रीपुरूहूतिका माता का चंडीयागं सहित वसंत नवरात्रि महोत्सव दस दिन तक बडे वैभव के साथ मनाये जाते है।

वैशाख शुद्ध पंचमी के दिन शंकर जयंती मनायी जाती है। श्रीशंकरचार्य जी को उदयकाल में अभिषेक और संध्या समय में वेद पारायण किया जाता है तथा वसंत पूजा भी होती है। और विद्वानों के भाषण भी आयोजित किया जाता है।

वैशाखशुद्द एकादसी को श्रीकाशी विश्वेश्वर स्वामी और

माता अन्नपूर्णा देवी का कल्याणोत्सव पाँच दिन मनाया जाता है।

वैशाख पूर्णिमा के सायंसंध्या में विद्युद दीपों से सारा मंदिर अलंकृत होता है और बाजे भजंत्रियों के साथ बडा कोलाहल होता है। भारी पैमाने पर आतिशबाजी भी होती है। भक्तजन बडे प्रेम और उत्साह के साथ नौका विहार मनाते है। पहली एका दशी भी बहुत ही बडे उत्साह के साथ मनायी जाता है।

आषाढ शुद्द एकादशी केदिन प्रातःकाल को नंदीश्वर का अभिषेक होता है। नंदी के गले में चने की गठडी बाँधना, केलेके गुच्छे बांधते है। सायं समय में नंदी उत्सव ढंग ढंग के वाद्य संगीत के साथ आतिश बाजी करते हुए बडे धूमधाम से मनाया जाता है। भक्त जनों के आनंद और उत्साह में वेदमंत्रों का उच्छारण और स्वस्ति वचनों के साथ बहुत ही रोचक पूर्ण होता है। ऐसा लगता है जैसे ऐसा उत्सव न भूतो न भविष्यति । नंदीश्वर के लिए ऐसा भव्य उत्सव विस्वभरमे कही भी मनया नहीं जाता।

श्रावण मास में शुक्रवार के दिन वरलक्ष्मी व्रत के दिन हजारों भक्त जन माताओं का कुंकुमार्चन करते हैं। श्रावण पूर्णिमा के दिन भी कुंकुमार्चन किया जाता है।

भाद्रपद शुद्द चविति, गणेश चतुर्थी के दिन से सात दिन तक श्रीपाद श्रीवल्लभ की जयंती मनायी जाती है। बहुत और भक्ति से ये उत्सव मनाया जाता है।

श्रीसिद्दि विनायक स्वामी का गणेश उत्सव नवरात बडी धूमधाम से मनाया जाता है।

भाद्रपद बहुल पाड्यमि से लेकर भाद्रपद आमावास्या तक महालय पक्ष के संदर्भ में गयापाद, विष्णु पाद मंदिर में अनेक प्रांतो से भक्त जन आकर अपने पितृ देवताओं की मुक्ति



केलिए महालय श्राद्द पिंड प्रदान तर्पण आदि कार्यों का निर्वाह करते है। किसी रोज आकर भी यह कार्मल्यम आप यहा कर कसते है। और यही पादगया मे पिंडदान आदी कार्य की विशेषता है।

आश्वयुज शुद्द प्रतिपदा से विजय दशमि तक शरन्नवरात्रि मनाए जाते हैं। नित्य श्रीचक्रार्चन, महा पूजा अन्नदान वगैरे कार्यक्रम होता है। श्री राजराजेश्वरी माँ को हर दिन अलग अलग अलंकारण किया जाता है। श्री पुरूहूतिका देवी की प्रत्येक पूजा बडी धूमधाम से की जाती है। यहाँ दशहरे की पूजाएँ हरएक को देखना ही चाहिए। ये अवर्णनीय है।

आश्वयुज बहुल पंचमी से पिठापुरम के ही नहीं अडोस पडोस के गावों से भी शिव मंडल दीक्षा के लिए माला धारण करने कुक्कुटेश्वर स्वामी की सन्निधि में आते हैं और माला धारण करते है।

कार्तीक मास में हर रोज और हर सोमवार के दिन एकादशि और पूर्णिमा के दिन - अमावास्या और मास शिवरात्री के दिनों में श्रीकुक्कुटेश्वर स्वामी का अभिषेक, एकादश रुद्राभिषेक, लक्ष बिल्वार्चन, रुद्र याग आदि पूजाएँ करते है। हजारों भक्त पुष्करणी मे पुण्य स्नान करते है। कार्तिक शुद्द चविति के दिन कार्तिकेय को क्षीराभीषेक (दूध से अभिषेक) किया जाता है। कार्तीक पूर्णिमा के दिन ज्वाला तोरण आदि विशेष पूजाएँ होती है।

कार्तीक शुद्दद्वितीया से बहुत से **दत्त स्वामी** के भक्त बहुत दूर दूर से आकर यहाँ दत्त दीक्षा माला धारण करते है।

मार्गशिर्ष शुद्द पाड्यमी के दिन पहली पाड्यमी के संदर्भ में हजारों भक्त जन यहाँ के पुष्करणी में पुण्य स्नान करते है।

उसी दिन शिवदीक्षा लेने वाले अपनी दीक्षा की समाप्ति

करते हैं और कुक्कुटेश्वर स्वामी के लिए रुद्रयाग और विशेष पूजाएँ करते है।

मार्गशिर शुद्द षष्टि केदिन श्रीसुब्रह्मण्येश्वर स्वामी की प्रत्यक्ष पूजा और क्षीराभिषेक किया जाता है।

मार्गशिर्ष शुद्द नवमि के दिन से एक सप्ताह तक पाद गया क्षेत्र में दत्त जयंती बडे वैभव पूर्वक सातों दिन मनायी जाती है। देश विदेश के अनेक प्रांतों से भक्त जन इस महोत्सव में भाग लेने के लिए आते है। यही एक बडी विशेषता है।

उसी प्रकार धनुर्मास में पूजाएँ और इसी महीनें में आनेवाली पूर्णिमा को त्रिमशत कोटि पूर्णिमा भी कहते है। उस दिन श्रीराजराजेश्वरी समेत श्रीउमाकुमार स्वामी की विशेष पूजा करते है। उत्तर द्वार द्वारा कैलाश प्रवेश महोत्सवम का आयोजन करते है। ग्रामोत्सव भी मनाते हैं। भगवान के साथ उत्तर द्वारसे प्रवेश करेंगे तो हम मरणोपांत कैलाश में जाएँगे ऐसा बडे बुजुर्गों का कहेना है।

मकर संक्रांति त्योहार को तीन दिन विशेष पूजाएँ और नगरोत्सव मनाया जाता है। यह यहाँ की प्रथा है।

विशेष कर माघ मास में शनिवार, इतवार और एकादशी के दिनों तथा रथ सप्तमी के संदर्भ में हजारो भक्त जन पुष्करणी में पुण्य स्नान करते है।

माघबहुल् एकादशी से छेः दिन स्वामी के कल्याणोत्सव बडे धूमधाम से मनाते है। और वाद्य तालों से मंदिर गूँज उठता है। कई प्रकारकी आतिशबाजी होती है। नृत्य गीत आंदि समस्तोपचारों से स्वामी को पूर्वकालीन संप्रदाय पध्दति में संतृप्त करते हैं। इस में लाखों की संख्या में भक्त जन भाग लेते है।

इस उत्सव में सुबह,शाम नाना प्रकार के वाहनों पर नगरोत्सव किया जाता है।



महाशिवरात्री के शुभ अवसर पर करीब करीब तीनलाख भक्त जन पुष्करणी में पुण्य स्नान करते है। अमावस्या के दिन रथोत्सव ऐसा मनाया जाता है मानों न भूतो न भविष्यति हर भक्त को इस शिव रात्री के महोत्सव को सारे जीवन में कम से कम एक बार अवश्य देखना चाहिए। इस महोत्सव के वैभव का वर्णन करना हजार सिर और दो हजार जिहवावाला आदिशेष केलिए भी कठिन कार्य है । ऐसा बडों का कहना है।

फाल्गुन शुद्द पाचंमि तथा विदिया को श्रीपुष्पोत्सव का आयोजन बडा ही सुंदर और नयनानंदकर होता है। विभिन्न वाद्य के साथ स्वामी के लिए जो एकांतसेवा झूले का गाना होता है वह बडा ही मनोरंजक सुश्राव्य और मन मोहक होता है। श्री स्वामी जी और माताजी को झूले पर झुलाने का और शयन सेवा बडे मन मोहक होते है।

फाल्गुन शुद्द पूर्णिमा के दिन वसंतोत्सव मनाया जाता है यानी रंगो का त्योहार होली मनायी जाती है। स्वामी का कल्याण सोलह दिन तक बडे रुप से मनाया जाता है।

## श्री कुंती माधव दर्शन

पिठापूरम का श्री कुंती माथव मंदिर अति प्राचीन है । यह वैष्णव दिन्य क्षेत्र है। श्री कुंती माधव पादगया के क्षेत्रपालक है। इन के दर्शन बिना पिठापूरम तिर्थ क्षेत्र संदर्शन का फल नही मिलता। इस क्षेत्र का भी महर्षि व्यासने दर्शन किया। उन्होंने अपने स्कांद पुराण में भीम खंड में इस तरह वर्णन किया ' माधवो मोदते तत्र यत्र कुंती पित्रुष्वसा'अपनी बुआ कुंती देवी से पूजित हो कर स्वामी श्रीकुंती माधव स्वामी कहलाने लगे।

सकुंती माधव देव पूजया मासवाकसु मेः इन श्रीकुंती माधव स्वामी की पूजा स्वयम् महर्षि व्यास ने भी अपने श्लोकों से

अर्चित किया । ऐसा उन्होंने अपने काव्य में वर्णन किया है।

स्वामी के बारे में इतिहास है । पुराने जमाने में देवेन्द्र ने वृत्तासुर नाम के राक्षस का संहार किया। वृतासुर त्वष्ट प्रजापति से देवेंन्द्र का संहार करने केलिए सृजन किया गया था । ब्राह्मण वृतासुर का वध करने से देवेन्द्रं को ब्रह्महत्या का दोष लग गया।

देवेन्द्र ने अपने इस ब्रह्महत्या दोष निवारण केलिए पाँच विष्णु मूर्तियों की प्रतिष्ठा की १) वाराणाशी २) प्रयाग ३) पिठापुरम ४) रामेश्वरम ५) केरल (अनंत पद्मनाभम)।

काशी क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्वामी बिंदुमाधव के नाम से, प्रयाग में प्रतिष्ठित स्वामी वेणी माधव के नाम से, पिठापुरम में प्रतिष्ठित स्वामी कुंती माधव के नाम से, रामेश्वरम् में स्थापित स्वामी सेतुमाधव के नाम से अनंतपद्मनाभ केरल में प्रतिष्ठित स्वामी सुंदर माधव के नाम से प्रसिध्द हुए हैं।

पिठापुरम में प्रतिष्ठित माधव स्वामी श्रीकृष्ण की बुआ कुंती देवी से अर्चित हुए इसलिए स्वामी का नाम 'कुंती माधव' के नाम से प्रचलित और प्रसिध्द हो गया।

श्री कुंती माधव स्वामी कृतयुग में देवेन्द्र से प्रतिष्ठित होकर पूजा पाकर, त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्र से पूजित हुए। द्वापर युग में पांडव माता कुंती देवी से अर्चित होकर 'कुंती माधव के नाम से प्रसिध्द हो गये। अब कलियुग में कितने ही भक्तों पर अपनी कृपादिखा रहे है। सब भक्त इन स्वामी जी की पूजा कर के पादगया क्षेत्र संदर्शन का संपूर्ण फल पाकर कृतार्थ हों और आयुरोरांग्य, अष्टऐश्वर्याभिवृद्दि के साथ अपना जन्म पावन कर लें।

सूचना :- यह क्षेत्र दक्षिण मध्य रेलवे के हावडा और चेन्नाय के बीच अन्नावरम और सामर्लकोटा के बीच में यह पिठापुरम रेल



स्टेशन है। और स्टेशन से एक किलो मीटर दूरी पर यह परम पवित्र पादगया क्षेत्र है। काकिनाडा से अन्नवरम जानेवाले रास्ते में काकिनाडा से १८ कि.मी. की दूरी पर २१४ वे हैवे में हैं (सूचना समाप्त)

## पीठिका पुरम का ऐतिहासीक प्रशस्ती

पिठापुरम केवल पुराण और पुण्य क्षेत्रों के लिए ही प्रसिद्द नहीं बल्की यह ऐतिहासिक रुप से भी सुप्रसिद्द है । क्रिस्त शकारंभ के पहले से ही यह कई राजाओं की राजधानी थी। पिट्टपुरम किला शत्रु दुर्भेद्य माना जाता था। अब तक पुराणव स्तु निपुणों ने जो जाँच पडताल की उस से पुराने शासनों से पता लगाया गया है कि वि. श. २१० मे यानी लगभग अठारह शताब्दियों के पहले ही आँध्र राजा शातवाहनों के अधीन में यह नगर था। कई शासनों मे इस का नाम पिष्ठपुरम लिखा गया है। कुछ शासनों में पिठापुरम लिखा हुआ है। कुछ में श्रीपीठ भी लिखा हुआ है। पुरुहूतिका देवी के नाम से पुरुहूतिका पट्टणम भी एक जमाने में प्रचलित था।

श्रीनाथ कवि ने अपने ''भीमेश्वर पुराण' के तीसरे अश्वास में इस शहर के नामों को 'पिठापुरम' पीठिकापुरम' पीठापट्टणम' लिखा है। श्रीनाथ महाकवि १४ वी शताब्दी के है। नाम के अंदर यह जो भेद है इन्हें हम कविता के छंद के लायक लिखा गया या बदला गया समझ सकते हैं। जो भी हो यह पिठापुरमबहुत प्राचीन है इस के कई उदाहरण मिलते है। यहाँ के श्री कुक्कुटेश्वरालय और कुंतीमाधव के मंदिर अति प्राचीन हैं।

सन् ११८६ में वेलनाटि चोलवंश के तीसरा गोक राजा की पत्नी 'जयंबिका' ने श्रीकुक्कुटेश्वर स्वामी को 'नवखंडवाडा' गाँव को दान में दिया ऐसा इतिहास लिखने वाले पंडितो ने

**कुंती माधव देवुनकु विश्रांति प्रदेशंबुनु**

**हुंकारिणी महा देवि कि विहार संकेत भवनंबु**

**पीठांबिका लक्ष्मी काट कूटंबुनु, हेला सानिकि हाला'**

**पान गोष्ठी मंडपंबुननंदेगिभूत भेताल ढाकिनी**

**प्रेतरंक भैरव व्रात निर्मित, प्रकार वप्रहट्ट कुट्टिमंबगु**

**पीठपट्टणंबु**

व्यास महर्षि अपने शिष्यों के साथ इस क्षेत्र में आये और अपने स्कांद पुराण में इस क्षेत्र की स्तुति की।

रचना

**तेलुगु - द्विभाष्यम् सुब्रह्मण्यशर्मा**

आस्थान वेद पंडित

**हिंदी स्वेच्छानुवाद - केतिनीडि वेंकटा रेड्डी'**

हिंदी पंडित

**सहकार्य - श्री मनोजकुमार**

कुक्कुटेस्वर देवस्थान



लिखा है। उन्होंने यह भी लिखा कि सन् ११९५ में कोना मंडलाधिपति ने श्री कुंती माधवस्वामी को ''ओदुरु'' गाँवदान में दिया था। सन् १४३३ में वासिरेडि पोकिनीडु ने श्री कुंती माधव स्वामी के मंदिर में मंडपम का निर्माण करवाया और ताड के पेडोंका बगीचा बनवाया था। उन्होंने ही श्री कुक्कुटेश्वर स्वामी के मंदिर में पाँच प्रतिष्ठा करवायी, ऐसा कुंतीमाधव स्वामी के आलय के स्थंभ पर जो शासन है उस से पता लगा है। ऐसा परिशोधकों का कहना है।

## पिठापुरम देवताओं का निर्माण।

इस तरह द्वादश पुण्य क्षेत्रों में से एक पिठापुरम भी एक है ऐसा पुराणेतिहासों में प्रसिद्द है। प्रख्यात त्रिगया क्षेत्रों में 'पादगया' शिव क्षेत्रों में श्री कुक्कुटेश्वर स्वामी, ''पंच माधवों में'' श्री कुंती माधव, श्री महादेवी के अष्टादश शक्ति पीठों में 'पुरूहूतिका पीठम,' और क्ष दत्तात्रेय का प्रथम अवतार श्रीपाद श्रीवल्लभ का जन्म स्थल इस तरह 'देवी' 'शिव' 'विष्णु' 'दत्त' गयाक्षेत्र होने के कारण पिठापुरम बहुत पुण्यकारी, पापहारी, पुण्यक्षेत्र और तीर्थ क्षेत्र है।

हमारे देश के पंच आराम में कुमारा रामा क्षेत्र में यह 'पीठा पट्टणम'' (पिठापुरम) दैवनिर्मित है ऐसा भीमेश्वर पुराण में कवि सार्वभौम श्रीनाथ कवि ने इस प्रकार वर्णन किया।

श्रीरस्तु शुभमस्तु अविग्नमस्तु

# श्री कुक्कुटेश्वर स्वामि देवस्थान

पादगया क्षेत्र, पिठापूरम - ५३३४५०

## नित्य अन्नदान पधक

परम पवित्र पादगया क्षेत्र मे परमात्मा स्वरुप भक्तों को नित्य अन्नदान करने कि विनती अनेक भक्त कर रहे है। मुख्य रूप से जो भक्त दूर प्रांतो से आते है भोजन का प्रबंध न होने के कारण उन को कठिनाई से गुजर ना पडते है। भक्तों को कियागया अन्नदान साक्षात परमात्मा को दिया जानेवाला नैवेद्यजैसा ही है। सब दानों मे अन्नदान महान है' ऐसा श्रुतीपुराणो मे कहा है।

स्लोक :- **नान्नोदक समंदानं सर्वाद स्यःपरमंव्रतमः**

**नागायत्र्याः परंमंत्रां नमातुः परदैवतमः**

अर्थ - गायत्रि मंत्र से बडा मंत्र, एकादशि व्रत से बडा व्रत, माँ से बडा भगवान, अन्नदान से बडा दान नहीं हैं

''त्रिमूर्ति स्वरुप दत्तात्रेय स्वामी पिठापुरम क्षेत्र



# शास्वत पूजा पध्दती के विवरण

स्वयंभुवमूर्ति हुए श्री कुक्कुटेश्वर स्वामि और श्री दत्तात्रेय स्वामि को **500.00** रुपये से ज्यादा जमा पर दाताओं के इच्छा के अनुसार साल मे एक बार अभिषेक करके प्रसाद पोस्ट द्वारा भेजा जाएगा।

श्री राजराजेश्वरी माता, श्री पुरुहूतिका माता को **500.00** रुपये से ज्यादा जमा करने पर दाताओं की इच्छा के अनुसार साल में एकबार कुंकुमार्चन करके प्रसाद पोस्ट द्वारा भेजा जाएगा।

**सुचना :-** दाताओं का पैसा जमा होने के बाद एक साल बाद पूजाए करायी जायेगी और प्रसाद पोस्ट से भेजा जायेगा ।

**कार्यनिर्वाहण अधिकारि**

**श्री कुक्कुटेश्वर स्वामि देवस्थान**

पपादगया क्षेत्र, देवादायो दर्मदाया शेखा,
**पिठापूरम - ५३३४५०,** तुर्प गोदावरी जिल्ला.
आंद्रप्रदेंश, फोन : 08869-252477

मे भीख मांगते है और भिक्षा देनेवाले को शिघ्र ही अनुग्रहीत करते हैं। ऐसा श्री गुरुचरित्र में लिखा हुआ है। उसी तरह सुमति देवी को उन की भिक्षा से प्रसंन्न होकर उनकी इच्छा के अनुसार उनके घर मे जन्म लेकर श्री पादवल्लभ नाम से जगद्विख्यात बन गये यह सबको पता है।

केदार कुंभकोणम समान इस दिव्यश्रेत्र मे अन्नदान करना बहुत विशेष बात है।

काशी मे कियागय अन्नदान से त्रिवेणी मे कियागया अन्नदान विशेष है। श्रीशैल में करनेवाल अन्नदान प्रयाग से भी विशेष है। और इन सब क्षेत्रों में होनेवाले अन्नदानों से पिटापूर क्षेत्र मे होनेवाला अन्नदान सबसे महत्वपूर्ण है।

त्रिगया क्षेत्रों मे से जो तीसरा पादगया क्षेत्र है उसमे अन्नदान करनेवालों का शाश्वत ब्रह्मपद मिलता है।

भक्त पर्वदिनों पर और जन्मदिन पर, शादि के सालागिरा जैसे शुभ औसर पर अपने बडों की याद मे उनकी प्रताब्दिके तिथि पर अन्नदान करना उचित और पुण्यकारी होगा।

एक लाख रुपयों से ज्यादा राशी देनेवालों को महानिरतान्न प्रदाता, ५० हजार रू. से जादा देनेवालों को विशिष्ठ दाता, २५ हजार तक देनेवालों को अन्नदाता, १० हजार रू. तक देनेवालों को दाता प्रकटित किया जाएगा।



उनकी इच्छा के अनुसार उनके दिये हुए धन राशी पर जो ब्याज आयेगा सिर्फ उसी का विनियोग करके अन्नदान कियाजाएगा। इस केलिएसे कम से कम १५०० रू. समर्पित कर सकते है।

शंकालूवाले भक्त इस विषयपर देवस्थान पर विचारण कर सकते है।

**मुख्य सूचना :-** १० लाख रुपयें समर्पित करनेवालों को व्यास्थापक नित्यअन्नदाता प्रकटिक किया जायेगा और हर दिन उनके नाम पर अन्नदान किया जायेगा।

**कार्यनिर्वाहण अधिकारि**

**श्री कुक्कुटेश्वर स्वामि देवस्थान**

पादगया क्षेत्र, देवादायो दर्मदाया शेखा,
**पिठापूरम - ५३३४५०,** तुर्प गोदावरी जिल्ला.
आंद्रप्रदेंश, फोन : 08869-252477
www.srikukkuteswraswamypadagaya.com
www.padagaya.com
email: eopadagaya@gmail.com

भेजनेवाले दाताएँ नीचे दियेगये स्टेट बेंक इंडिया, पिटापूरम आनलैन अकौंट नंबर पर राशी भेजके हमे कृतार्थ (उपकृत) करे और हमे जानकारी दे ।
SBI A/c No. : 11003309978
IOB A/c No. : 055401000001702